

श्री कीरति खे कन्या जाई आ
थी घर घर मंगल वाधाई आ॥

बडे शुक्ल अष्टमी प्यारी आ
जंहि में जाई श्री राज कुमारी आ
श्री गौलोक जी स्वामिनी आई आ॥

यमुना तीर ते रावल रज धानी
जंहि जो राजा वृषभानु आहे महादानी
थी सफल पूर्वली कमाई आ॥

श्री कीरति अमां महा भागनि भरी
धन्य कुखिड़ी अमड़ि तुंहिजी फूली फली
सभु शक्तियुनि जो मूलु प्रगटाई आ॥

कृष्ण परम अहिलादिनि सुखकारी
शेष शारदा साराहे जंहिजी महिमा प्यारी
आई अडणि कृपा करे उहाई आ॥

थियो धन्य दिवस धन्य साई घड़ी
जंहि में किशोरी सुवनि आ अवनि उतरी
कोटि चन्द्र जी चान्दनी छाई आ॥

अमड़ि गोदि में श्रीजू किलकारी करे

बुधी सारे परिवार जी दिलिड़ी ठरे
धन्य कीरति जे भाग जी भलाई आ॥

आहे रासि ईश्वरी श्री राधा राणीं
सब सखियुनि शिर मोर सदां सुखखानी
जेका शुक सनकादि साराही आ॥

द्रियण वाधाई यशोमति आई आ
जहिंजे गोद में कुंअरु कन्हाई आ
द्रिसी रूपु अनूप हुलसाई आ॥

साई अमड़ि खुशियुनि जी आ खाणि खुली
द्रिसी गद् गद् थिया श्री कीरति लली
विश्व सारी अजु आनन्द वाधाई आ॥